धर्मवीर भारती के काव्य में सौंदर्य चेतना

डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा
नैवी चिल्ड्रन स्कूल
गोवा

आलोचकों में धर्मवीर भारती जी को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना है। उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का यह तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। परंतु उसके साथ–साथ इतिहास और समकालीन सीपियों पर भी इनकी पैनी दृष्टि रही है जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों तथा अलोचना में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानियों–उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन के यथार्थ चित्रण है। 'ठंडा लोहा' धर्मवीर भारती का फरवरी सन् १९५२ में प्रकाशित प्रथम कविता संग्रह है जिसमें सन् १९४६ से १९५२ के बीच लिखी कविताओं के द्वारा भावुक कवि हृदय को अभिव्यक्त किया है। 'अंधा युग' में स्वातंत्रयोत्तर भारत में आयी मूल्यहीनता के प्रति चिंता है। उनका बल पूर्व और पश्चिम के मूल्यों, जीवनशैली और मानसिकता के संतुलन पर है, व न तो किसी एक का अंधा विरोध करते हैं न अंधा समर्थन, परंतु क्या स्वीकार करना और क्या त्यागना है इसके लिए व्यक्ति और समाज की प्रगति को ही आधार बनाना होगा। उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दु:ख दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है जो इनके काव्य में विद्यमान है।

ठंडा लोहा की अधिकतर कविताएँ नारी सौंदर्य व प्रेम भावना से परिपूर्ण है। फागुन की शाम, वो न आई गीत, झील के किनारे, बादलों की पाँत, कुम्हारे चरण, बसंती दिन, पावस गीत आदि कविताओं में प्रकृति सौंदर्य का आलम्बन व उद्दीपन और मानवीय रूप में सुंदर चित्रण हुआ है तो तुम्हारे चरण, प्रार्थना की कड़ी, उदास में, फागुन की शाम, फिरोजी होंठ में नारी सौंदर्य की दर्शाया है। प्रार्थना की कड़ी, कुम्हारे चरण शीर्षक कविताओं में प्रेयसी के प्रति कवि की आत्म समर्पण की भावना उनके वैष्णव संस्कारों से युक्त होने के कारण उनकी कविता को प्रेम के उत्कर्ष पर प्रतिष्ठित करती है। एक पत्र, उदास तुम कुछ कविताओं में वेदना तथा विरह की संवेदना का उत्कट रूप देखने को मिलता है। ''कविता की मौत'' थके हुए कलाकार से, फूल मोमबत्तियाँ और सपने शीर्षक कविताओं में कवि का जीवन और कवि की वाणी समाज के प्रति अर्पित जीवन और वाणी के रूप में प्रस्तुत हुई है।

'सात गीत वर्ष' सन् १९५२ से लेकर सन् १९५९ के बीच रचित भारती जी की ७ वर्ष की ५१ कविताओं का दूसरा संग्रह है इस संग्रह का कवि उम्र के साथ साथ चिन्तनशील व परिपक्व हो गया है जिससे अब ठंडा लोहा वाली भावुकता, मांसलता व रोमानीयत अब काव्य में नहीं है। 'सात गीत वर्ष' कविताओं में नारी सौंदर्य व प्रेम के प्रति बदलते दृष्टिकोण के साथ–२ कवि का प्रकृति के प्रति भी दृष्टिकोण बदलता दिखाई देता है।

'सपना अभी भी' सन् १९९३ में प्रकाशित भारती का एक महत्वपूर्ण कविता संग्रह । इन कविताओं में उम्र की प्रौढ़ता के साथ कवि का चिन्तन भी प्रौढ़ रूप में व्यक्त हुआ है। 'कन–कन तुम्हे जी कर' कविता में कवि का रोमांटिक मूड अभिव्यक्त हुआ है, किंतु यहाँ रोमानी तत्व संयत, परिपक्व और सांझे में भोगे दर्द की समझ से, अभिजात्य से समृद्ध हो गया है। यहाँ पहले वाला उछलता आवेग कुछ अंतर्मुखी वृत्ति में पक कर गंभीर हो गया है।

''दीदी के धूल भरे पाँव, एक कविता इलाहाबाद पर'' शीर्षक कविताओं में प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण है। इन कविताओं में प्रकृति के समस्त उपादान मानवीय संवेदना के साथ बनकर मनुष्य के ताप और त्रास दूर करते है।

अंधा युग के पात्रों के अंतर्द्वन्द्व के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव में विद्यमान भय, निराशा, निष्क्रियता उदासीनता, कुण्ठा, पीड़ा, क्रोध, घृणा, प्रतिशोध, प्रति हिंसा आदि मनोविकारों को भी व्यापक धरातल पर चित्रित किया है और इन्हीं नकारात्मक प्रवृत्तियों के उद्घाटन के द्वारा अनास्था के माध्यम से आस्था की, अविवेक के माध्यम से विवके की, मर्यादाहीनता के माध्यम से मर्यादा की, अन्याय

के माध्यम से न्याय की ओर अंधी के माध्यम से ज्योति की खोज की है।

'कनुप्रिया काव्य के अन्तर्गत भारती ने राधा–कृष्ण के परम्परागत एतिहासिक–पौराणिक प्रणय–प्रसंगों को अति संक्षिप्त कथानक के माध्यम से कलात्मक रूप में प्रस्तुत करते हुए अद्‌भुत सृजनात्मक क्षमता दर्शायी है। इस काव्य कृति में कृष्ण के लीला बिहारी स्वरूप के साथ धर्मवीर भारती में महाभारतीय कृष्ण के राजनीतिज्ञ और विश्लेषण परक व्यक्तित्वों को भी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१ स्वर्ग और पृथ्वी, धर्मवीर भारती, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भाषा भवन, काशी
२ धर्मवीर भारती के कथा साहित्य का साहित्यिक अनुशीलन, कंचन बाला, रामटेके, रायपुर, छत्तीसगढ़
३ डॉ. धर्मवीर भारती और हिन्दी पत्रकारिता, श्रीवास्तव यामिनी, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय
४ कुबड़ी कुबड़ी का हैराना? प्रभात प्रकाशन

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com